यह पुस्तक समकालीन भारत के सामाजिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में उपस्थित चुनौतियों को विश्लेषित करती है। इस पुस्तक में खाद्य असुरक्षा, कार्यपालिका एवं व्यवस्थापिका में टकराव, महिला सुरक्षा, किशोर अपराध, गंगा सफाई, स्वच्छता, स्मार्ट सिटी, पंचायती राज व्यवस्था, आतंकवाद, नक्सलवाद, नशा की समस्या, तमिल राजनीति के साथ साथ राजनीति में मूल्यों के क्षरण जैसे मुद्दों को स्पष्ट रूप से वर्णित किया गया है। यह पुस्तक विद्यार्थियों एवं प्रतियोगियों हेतु अत्यंत उपयोगी है।

डॉ. गौरव त्रिपाठी वर्तमान में श्रीमती इंदिरा गाँधी राजकीय पी० जी० कॉलेज लालगंज, मीरजापुर (उ० प्र०) में स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभागान्तर्गत असिस्टेण्ट प्रोफेसर है। इसके पूर्व डॉ. त्रिपाठी महात्मा बुद्ध महाविद्यालय अजुहा कौशाम्बी (उ० प्र०) एवं रमाबाई राजकीय महिला पी० जी० कॉलेज अकबरपुर अम्बेडकर नगर (उ० प्र०) में बतौर प्रवक्ता के रुप में सेवाएँ दे चुके हैं। आप विज्ञान साहित्य क्लब के संस्थापक अध्यक्ष रह चुके हैं जिसका उद्देश्य विज्ञान के प्रति छात्रों में अभिरुचि पैदा करना है। डॉ. त्रिपाठी के अनेक शोधपत्र अन्तर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय जर्नल्स में प्रकाशित हो चुके है तथा समसामयिक मुद्दों पर आपके स्तम्भ समाचार पत्रों में भी प्रकाशित होते रहते हैं। डॉ. त्रिपाठी लेखन क्षेत्र में सक्रिय रहते हुए 'पर्यावरणीय मुद्दे : बहुआयामी परिप्रेक्ष्य' विषयक पुस्तक का संपादन कर चुके है तथा स्त्री विमर्श में नयापन एवं प्रगतिशील स्त्री विमर्श जैसी संपादित पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं। डॉ. त्रिपाठी द्वारा लिखित 'लोकसभा : संरचना एवं प्रकार्य' नामक पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है। डॉ. त्रिपाठी को शिक्षा क्षेत्र में योगदान हेतु मिशन न्यूज टीवी द्वारा सुपर अचीवर्ड अवार्ड प्रदान किया गया है।

डॉ. कामिनी वर्मा वर्तमान में काशी नरेश राजकीय पी. जी. कालेज ज्ञानपुर, भदोही, उ.प्र. में इतिहास विभागान्तर्गत एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में अपनी सेवायें दे रही हैं। इसके पूर्व आप प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग में भी योगदान दे चुकी हैं। डॉ. वर्मा एक ख्यातिलब्ध सामाजिक चिंतक एवं स्तम्भकार हैं। सामयिक मुद्दों पर आपके स्तम्भ विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित होने वाले राष्ट्रीय दैनिक, साप्ताहिक समाचार पत्रों व पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। आप कैदियों हेतु 21 दिवसीय कौशल विकास की कार्यशाला का आयोजन जनपदीय कारागार ज्ञानपुर में कर चुकी हैं। आप पर्यावरण, महिला एवं मतदान जैसे ज्वलंत मुद्दों पर जागरूकता अभियान चलाती रहती हैं। आपके योगदान को देखते हुये आपको भारतीय शिक्षा रत्न अवार्ड, एशिया पैसिफिक इंटरनैशनल अवार्ड, राधाकृष्णन अवार्ड, बेस्ट एजुकेशनिस्ट अवार्ड, वागीश्वरी नारी शक्ति अवार्ड प्रदान किये गये हैं।

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
Distributors, Library Supplier, Online Bookstore & Exporter
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

ISBN 978-93-88998-19-2
9 789388 998192
₹1200

समकालीन भारत में सामाजिक एवं राजनैतिक मुद्दे

डॉ. गौरव त्रिपाठी • डॉ. कामिनी वर्मा

समकालीन भारत में सामाजिक एवं राजनैतिक मुद्दे

डॉ. गौरव त्रिपाठी • डॉ. कामिनी वर्मा

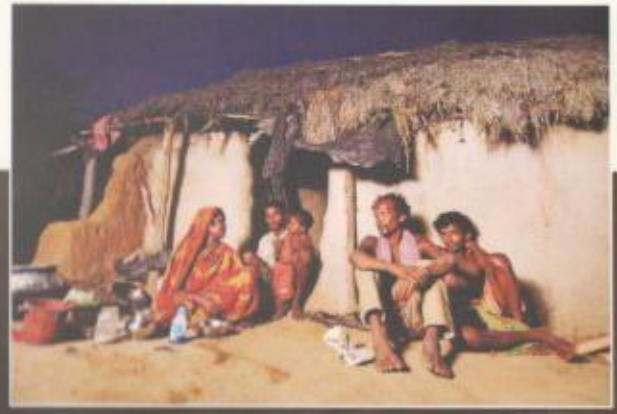

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

एल–9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

समकालीन भारत में सामाजिक एवं राजनैतिक मुद्दे

संस्करण : 2019
© सम्पादक
ISBN: 978-93-88998-19-2

इस सम्पादित पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के द्वारा प्रकाशित।

समर्पण

हमारे प्रेरणा स्रोत,
प्रातः स्मरणीय, पूजनीय
पुराणविद्
डॉ. कमला कान्त त्रिपाठी,
(प्रिंसिपल, इण्टर कॉलेज, तेजगढ़, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश)
एवं
पूजनीया श्रीमती कल्पना त्रिपाठी
को सादर।

विषय सूची

	पुरोवाक्	*vii*
	भूमिका	*ix*
	आभार ज्ञापन	*xiii*
	योगदान सूची	*xvii*
1.	भारत में ग्रामीण राजनीतिक सहभागिता का बदलता स्वरूप 73वें संविधान संशोधन का विशिष्ट सन्दर्भ *–डॉ. पुष्पेन्द्र कुमार मिश्र*	1
2.	खाद्य सुरक्षा कानून : भुखमरी व कुपोषण के खात्मे का हथियार – एक आलोचनात्मक समीक्षा *–अभय सिंह*	19
3.	भारतीय अर्थनीति के सत्तर वर्ष : एक समीक्षा *–डॉ. अखिलेश कुमार द्विवेदी*	43
4.	भारत–नेपाल : बदलते संबंध *–डॉ. आशीष धर त्रिपाठी*	74
5.	भारत में कार्यपालिका और न्यायपालिका संबंध : एक समीक्षात्मक अध्ययन *–बालेश्वर प्रसाद*	86
6.	भारत में महिलाओं की सुरक्षा केंन्द्र और राज्य सरकारों के लिए चुनौती *–डॉ. उपासना मिश्रा*	126

23. वही सेन, अमर्त्य

24. लाल, राहुल, "कुपोषण एवं भूख से मौतों का सच" हिन्दुस्तान दिसम्बर 2004, कैम्पस वर्ल्ड – पेज – 4

3

भारतीय अर्थनीति के सत्तर वर्ष : एक समीक्षा

भारत को आजाद हुये लगभग सत्तर वर्ष हो गये हैं। इन तमाम वर्षों में भारत ने अपने विकास के लिए वे अनेको प्रयत्न किये है, जिसकी शुरुआत अंग्रेजों के भारत से प्रस्थान की पूर्व संध्या पर जवाहर लाल नेहरू ने की थी। इन्होंने कहा था कि ''वर्षों पूर्व हमने नियति को फिर से मिलने का वचन दिया था और आज यह समय आ गया है जब हम अपना वचन पूरा करेंगे।'' उन्होंने आगे कहा था कि ''आज हम जिस उपलब्धि का जश्न मना रहे हैं वह तो उन महान उपलब्धियों और मंजिलों, जो हमारी प्रतीक्षा कर रही है, की ओर अग्रसर होने की दिशा में एक पहला कदम है तथा उस ओर जाने का एक पहला अवसर मिलना मात्र है।'' उन्होंने देश को सजग किया था कि भविष्य में गरीबी, अज्ञानता, बीमारियों एवं अवसरों आदि की असमानता को समाप्त करने के लिये प्रयास होंगे। इस उदघोषणा में नेहरू जी का इशारा भारत की जनता से जुड़ी उन समस्याओं से था जो विरासत में आजादी के समय उन्हें प्राप्त हुई थी। आजादी के सत्तर वर्ष बाद भी गरीबी, अज्ञानता, बीमारियों तथा अवसरों की विषमता मिटाने के लिये किये गये प्रयासों की सफलता आज भी अधूरी है क्योंकि भारत की आम जनता आज भी इन समस्याओं से जूझ रही हैं। इसके समग्र अध्ययन के लिए भारत के विकास नीति का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन आवश्यक हो जाता है। भारत ने अपने विकास नीति के मॉडल में एक अभिनव प्रयोग किया है। प्रारम्भिक दौर में जहाँ भारत ने पूंजीवादी मॉडल को अपनाया था तथा